संगोष्ठी का उद्देश्य

साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है यह समाज के यथार्थवादी चित्रण को प्रस्तुत करता है। साहित्य समाज को नई दिशा में अग्रसर करने की क्षमता रखता है। यह मनुष्य हित की सर्वोच्चता का अनुसंधान करता है।

इस संगोष्ठी में हम साहित्य और समाज के मध्य संबंधों की चर्चा करेंगे। सामयिक साहित्य और समाज के परिदृश्य को समझते हुए, उसके समक्ष वर्तमान चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा कर उचित समाधान और विश्व पर पड़ने वाले प्रभावों की भी चर्चा करेंगे।

संगोष्ठी के मुख्य विषय

- समकालीन साहित्य और समाज का परिदृश्य समझना।
- समकालीन साहित्य और समाज की चुनौतियों को समझाना।
- वर्तमान में गढ़े जा रहे विमर्षों की पड़ताल करना।
- विमर्ष एवं समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- साहित्य एवं समाज के भावी क्षितिज का अध्ययन करना।

उपविषय

- समकालीनता: अर्थ, संप्रत्यय, महत्त्व, उपादेयता
- साहित्य और समाज: अर्थ एवं अन्तर्संबंध
- समकालीन साहित्य: युगीन परिदृश्य एवं चुनौतियाँ
- समकालीन समाज: युगीन परिदृश्य एवं चुनौतियाँ
- साहित्य और समाज: विभिन्न समाज विज्ञानों से अन्तर्संबंध
- भूमण्डलीकरण और साहित्य तथा समाज
- समकालीनसाहित्यऔर समाज: भावी संभावनाएँ
- साहित्य और समाज: उपेक्षित वर्ग एवं अभिव्यक्ति
- साहित्य और समाज: परिवर्तित होता परिदृश्य
- सूचना क्रांति एवं समकालीन साहित्य तथा समाज: वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ
- साहित्य और समाज: भावी परिदृश्य

आयोजन समिति

डॉ. सईद गुल खान, डॉ. मुकेश प्रजापत, डॉ. राजीव गाँधी, डॉ. आनंद व्यास
श्री मुकेश तेली, डॉ. मनोहर लाल स्वामी, डॉ. शालिनी पुरोहित, डॉ. इंदु शर्मा
डॉ. मीनाक्षी कुबावत, डॉ. प्रतिभा दिरवाया, डॉ. कांतिलाल निनामा
डॉ. मनोज सिंह, डॉ. सुरभि दोसी, डॉ. वासुदेव चरपोटा, रॉयल दोसी
डॉ. राजनारायण डामोर, डॉ. राजेश त्रिपाठी, रूद्रदीप गौतम
कैलाश चंद कटारा, डॉ. मुकेश चंद्र शाक्य, डॉ. महेश पुरोहित, डॉ. जया गोसाई
डॉ. लीना पाठक, डॉ. लक्ष्मी जैन, डॉ. विक्रम सिंह सोलंकी, डॉ. अपरा प्रजापत
डॉ. दिनेश कुमार तेली, डॉ. ओमप्रकाश, डॉ. अंकिता रोकडिया जैन, डॉ. ललित मीना
डॉ. विशाल उपाध्याय, डॉ. गुलाबधर द्विवेदी, डॉ. प्रवीण जैन

संरक्षक
प्रो. केशव सिंह ठाकुर
माननीय कुलपति
गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा

आयोजन सचिव
डॉ. राकेश डामोर
विधि/अकादमिक अधिष्ठाता एवं अध्यक्ष खेल विभाग
गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा

सह-आयोजन सचिव
डॉ. मीनाक्षी अधिकारी
संकाय सदस्य (हिंदी विभाग)
गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा

डॉ. अदिति गौड़
डॉ. केशरीमल निनामा
संकाय सदस्य, जी.जी.टी.यू. बाँसवाड़ा

समन्वयक
प्रो. मनोज पण्ड्या
परीक्षा नियंत्रक, जी.जी.टी.यू. बाँसवाड़ा

डॉ. नरेन्द्र पानेरी
सम्बद्धता प्रभारी, जी.जी.टी.यू. बाँसवाड़ा

सलाहकार समिति
प्रो. अलका रस्तोगी
शोध निदेशक, जी.जी.टी.यू. बाँसवाड़ा

प्रो. लक्ष्मण लाल परमार
उप कुलसचिव, जी.जी.टी.यू. बाँसवाड़ा

डॉ. अर्पित पाठक
प्राचार्य, अभियांत्रिकी महाविद्यालय, जी.जी.टी.यू. बाँसवाड़ा

राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन साहित्य और समाज : परिदृश्य, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

21 अप्रैल 2025, सोमवार

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

पंजीकरण एवं शोध पत्र
जमा करने की अंतिम तिथि
19 अप्रैल 2025

(हिंदी विभाग)

गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय
बाँसवाड़ा, राजस्थान

गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय के बारे में

गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा अमर योद्धा स्वातंत्रयवीर, महान समाज सुधारक पूज्य गोविन्द गुरु के नाम से स्थापित गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय बाँसवाड़ा जनजाति क्षेत्र में उच्च शिक्षा नवीन परिदृश्य प्रतिष्ठित करने को प्रयासरत है इसके सम्बद्ध महाविद्यालय बाँसवाड़ा, डूँगरपुर और प्रतापगढ़ में हैं। विश्व विद्यालय मुख्य रूप से उच्च शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार और विकास के लिए है। इसका उद्देश्य ज्ञान का सृजन करना, व्यावसायिक कौशल को तीव्र करना और कार्यात्मक लोकतंत्र के अत्यधिक पोषित आदर्शों के आधार पर समाज के पुनः निर्माण के लिए होनहार युवा पीढ़ी के बीच उपयुक्त दृष्टिकोण विकसित करना है। विश्वविद्यालय युवाओं को उनकी वर्तमान शैक्षणिक आवश्यकताओं और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए गुणवत्ता उन्मुख-सार्थक शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। विश्वविद्यालय में वर्तमान में कई पाठ्यक्रम चल रहे हैं जिनमें वाणिज्य, प्रबंधन, विज्ञान, इंजीनियरिंग, कला, योग, विधि एवं वेद विद्यापीठ गुरुकुल आदि हैं।

बाँसवाड़ा के बारे में

बाँसवाड़ा को ''सौ द्वीपों का शहर'' भी कहा जाता है, जिसे ''राजस्थान का चेरापूँजी'' भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ राजस्थान में सबसे अधिक वर्षा होती है, साथ ही माही नदी में कई द्वीप भी हैं, जो पूरे शहर में बहती है। माही बजाज सागर बाँध बाँसवाड़ा शहर से लगभग 16 किमी दूर माही नदी पर बनाया गया है। दाएँ और बाएँ मुख्य नहरें और उनकी सहायक नदियाँ 60,149 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई करती हैं। बांसवाड़ा जिला राजस्थान के सबसे दक्षिणी भाग में स्थित है। यह उत्तर में प्रतापगढ़, पश्चिम में डूँगरपुर, पूर्व और दक्षिण में मध्य प्रदेश के रतलाम और झाबुआ जिले और दक्षिण में गुजरात के दाहोद जिले से घिरा हुआ है। बाँसवाड़ा का सबसे नजदीकी प्रमुख शहर उदयपुर है जो 165 किमी दूर है, इंदौर और अहमदाबाद भी क्रमशः 220 किमी और 250 किमी दूर हैं। यह शहर नई दिल्ली से 827 किमी और मुंबई से 710 किमी दूर है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के बारे में

साहित्य और समाज के सम्बन्धों की खोज का प्रश्न काफी पुराना है। आज के समय में समकालीन साहित्य के चिन्तन का यह प्रमुख प्रश्न बन गया है। साहित्य की रचना में समाज की भूमिका अहम् रही है। साहित्य जनसमूह के हृदय का सैलाब है जो समाज के प्रतिबिंब को हमारे सामने प्रस्तुत कर अपनी संस्कृति से रूबरू कराता है। 'दर्पण-बिंब' वाला दृष्टिकोण साहित्य को दस्तावेज के रूप में देखता है। साहित्य सदैव समाज और संस्कृति के केन्द्र में रहा है। इसका उद्देश्य साहित्य और समाज के बीच अन्तर्संबंधों की पहचान करना है। समाज और साहित्य के वर्तमान परिदृश्य को समझना इनके मध्य पारस्परिकता और वर्तमान जीवन मूल्यों की अभिव्यंजना करना। वर्तमान समय में उन प्रमुख मुद्दों पर चर्चा करना जो विश्व पटल पर साहित्य और समाज को प्रभावित करते है जैसे वैज्ञानिक परिदृश्य में साहित्य, भाव और भाषा में साहित्य, आधुनिक तकनीक में साहित्य, वर्तमान सामाजिक विमर्शों में, सामाजिक न्याय में बदलते बाजारवाद में साहित्य की संवेदना और सांस्कृतिक रूपायन में साहित्य की भूमिका उसके समक्ष चुनौतियाँ एवं वैश्वीकरण के स्वरूप की सम्भावनाओं पर विशेष ध्यान आकर्षित किया जाएगा। साहित्य और समाज के सामयिक परिदृश्य को स्पष्ट कर मानवीय मूल्यों के संरक्षक के लिए उपयोगी बनाया जा सकेगा। साहित्य संस्कृति का संरक्षक और भविष्य का पथ-प्रदर्शक है। संस्कृति द्वारा संकलित होकर ही साहित्य 'लोकमंगल' की भावना से समन्वित होता है।

आज आवश्यकता है कि सभी वर्ग यह समझे कि साहित्य, समाज के मूल्यों का निर्धारक है और उसके मूल तत्वों को संरक्षित करना जरूरी है, क्योंकि साहित्य जीवन के सत्य को प्रकट करने वाले विचारों और भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति है।

Registration Fee :

Particular	Amount
Students	Rs. 200/-
Academicians, Research Scholars & Corporate Delegates	Rs. 500/-

Call for Papers

इस संगोष्ठी में देश भर के छात्रों, शोधार्थियों और शिक्षाविदों से मौलिक शोध पत्र आमंत्रित किए गए हैं।

शोध पत्र निर्देश

- शोध पत्र में शीर्षक, बीज शब्द, शोध पत्र, संदर्भ ग्रंथ सूची एवं शोध लेखक विवरण (नाम, पदनाम, संस्था, मोबाइल नं. एवं ईमेल आईडी) का उल्लेख करें।
- शोध संक्षेप अधिकतम 400 शब्दों एवं बीज शब्द अधिकतम 5 स्वीकार्य/शोध पत्र की अधिकतम शब्द सीमा 3000 शब्द रहेगी।
- फॉण्ट यूनीकोड (मंगल, कोकिला, संस्कृत टेक्स्ट) शीर्षक साईज 18, शोध साईज 14-16 रहेगी।
- लेखन एवं संदर्भ MLA अथवा गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा द्वारा अनुमोदित शोध संदर्भिका अनुसार ही स्वीकार्य रहेगा।
- शोध पत्र MS Word एवं Searchable Pdf में ही स्वीकार्य रहेंगे।
- श्रेष्ठ एवं चयनित शोधालेखों को पीयर रिव्यूड शोध पत्र (ISSN) में प्रकाशित किया जाएगा।
- शोध संक्षेप एवं शोध पत्र ईमेल आईडी ggtunationalseminar2024@gmail.com पर भेजा जाना अनिवार्य है।

Mode of Payment

Beneficiary Name	Registrar GGTU Banswara Academic Department
A/c No.	41474061491
IFSC Code	SBIN0031231
Bank Name	SBI, Banswara

Seminar Registration Link:

https://forms.gle/ECN6vGW5BLL7HAAEA

& Send Paper to Email :

ggtunationalseminar2024@gmail.com

For further enquiry please contact to:

Dr. Meenakshi Adhikari (9414404694)

Dr. Aditi Goar (9950676187)

Dr. Keshrimal Ninama (9828341562)

Dr. Mukesh Prajapat (9929480530)